Q→ लाइबनित्ज के मोनैडोलॉजी की विशेषताओं की व्याख्या करें ?

Ans→ ईश्वर ने जब चिद्णुओं को उत्पन्न किया तब उसमें दो चीजें डाल दीं - ईक्षण तथा प्रमासन और गवाक्षहीन कर दिया।

प्रत्येक चिद्णु में चेतना की मात्रा में अन्तर पाया जाता है। इसे ही असादृश्यता नियम कहते हैं। इस नियम के अनुसार संचालित होने के कारण चिद्णुओं के बीच एक सुव्यवस्थित सोपानक्रम पाया जाता है जिसमें सर्वोच्च पर पूर्ण चेतन ईश्वर तथा निम्नतर पर अचेतन जड़ जगत है। यहाँ अचेतन से तात्पर्य चेतना विहीनता से न होकर चेतना की अल्पमात्रा से है। ऐसे अचेतन चिद्णुओं को लाइबनित्ज ने 'सोते हुए चिद्णु' नाम दिया है।

लाइबनित्ज के अनुसार किन्ही दो चिद्णुओं के बीच किसी प्रकार की रिक्तता नही है, इसे ही तारतम्यता या सातत्य का नियम कहते हैं।

गवाक्षहीनता के कारण सारे चिद्णु एक-दूसरे से पूर्ण स्वतन्त्र है। प्रत्येक चिद्णु अपने आप में पूर्ण विश्व है, क्योंकि उसमें सब कुछ समाहित है। इस ब्रह्माण्ड में अनन्त द्रव्य विद्यमान हैं, किन्तु कोई द्रव्य अन्य के समान नही है। यदि समान होते तो द्रव्य अनेक न मानकर एक मानना होता और ऐसा मानने पर चिद्णुओं का विशिष्ट व्यक्तित्व खण्डित हो जाता। चूंकि इनमें चेतना के स्तर तथा विशिष्ट स्थिति के अनुसार भेद है इसीलिए वे अन्य के समान नही हैं। यहाँ तक कि एक ही वर्ग के दो चिद्णु आपस के समान नही हैं, क्योंकि इनमें भी चेतना का अन्तर पाया जाता है। लाइबनित्ज इसे ही 'अविभेदों का तादात्म्य', कहता है जो उसके दर्शन को बहुतत्ववाद में परिणित कर देता है।

स्पिनोजा के अनुसार "द्रव्य वह है जो अपने आप में रहता है तथा अपने आप से जाना जाता है"। इस विचार से लाइबनित्ज प्रभावित थे तथा इसे ही आधार बनाकर वे कहते हैं कि किसी एक चिद्णु की क्रिया दूसरे को प्रभावित नही कर सकती, क्योंकि वे गवाक्षहीन हैं। अतः प्रत्येक चिद्णु अपने आप में पूर्ण तथा एक विश्व है, क्योंकि इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य

सब कुछ समाहित रहता है।

लाइबनित्ज के अनुसार प्रत्येक चिद्‌णु गवाक्षहीन होते हुए भी समस्त विश्व को प्रतिबिम्बित करने की क्षमता रखता है। किन्तु चेतना की मात्रा में अन्तर होने के कारण प्रत्येक चिद्‌णु भिन्न-भिन्न रूपों में विश्व को प्रतिबिम्बित करते हैं। कोई चिद्‌णु जितना अधिक चेतना होगा उसमें उतनी ही अधिक क्रियाशीलता भी पाई जाएगी और वह उतनी ही अच्छी प्रकार से विश्व को प्रतिबिम्बित करेगा। लाइबनित्ज के अनुसार, केवल ईश्वर ही एकमात्र ऐसा चिद्‌णु है, जो विश्व को पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित करता है, क्योंकि वह पूर्ण चेतन होने के कारण पूर्ण क्रियाशील है। ईश्वर के अतिरिक्त अन्य जितने भी चिद्‌णु हैं। उनमें क्रियाशीलता के साथ-साथ निष्क्रियता भी पाई जाती है। ऐसी क्रियाशीलता तथा निष्क्रियता के कारण प्रतिबिम्बित स्पष्ट तथा अस्पष्ट होते हैं।